



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान की सुदृढ़ता में समाचार पत्रों की भूमिका

निरंजन कुमार

शोधार्थी,

पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,

एसएसपीयू भिलाई

nkbhanu30@gmail.com

डॉ. इरफाना फातिमा

सहायक प्राध्यापक,

पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,

एसएसपीयू भिलाई

सार-

भारत के हृदय में स्थित छत्तीसगढ़ एक नवोदित प्रदेश है। छत्तीसगढ़ अपनी लोककला, लोकभाषा, लोकनृत्य, लोकगीत, जनजातीय परंपराओं तथा ऐतिहासिक विरासत की वजह से भारत के प्रमुख सांस्कृतिक समृद्धि वाले प्रमुख राज्यों में से एक माना जाता है। साथ ही अपने विहंगम प्राकृतिक सौंदर्य, विविधतापूर्ण वन्य जीवन, सहभागी सामाजिक व्यवस्था और विविधतापूर्ण लोक संस्कृति को लेकर प्रदेश की एक अलग पहचान है। इस गौरवमयी और चर्चित पहचान को बनाये रखने और सुदृढ़ करने में समाचार पत्रों ने बड़ी भूमिका निभाई है। छत्तीसगढ़ के समाचार पत्रों ने राज्य की सांस्कृतिक चेतना को विकसित करने तथा उसकी विशिष्ट पहचान को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रदेश के अखबारों की विकास पत्रकारिता ने यहां के सांस्कृतिक पक्षों को खासा महत्व दिया है। समाचार पत्रों ने प्रदेश की सांस्कृतिक विषयताओं को बृहतर समाज तक पहुँचाकर राज्य की सांस्कृतिक पहचान को और सुदृढ़ किया है जिसके फलस्वरूप प्रदेश की सांस्कृतिक लोकप्रियता व्यापक हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ के विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा उसे सुदृढ़ करने में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण करता है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि किस प्रकार समाचार पत्रों ने राज्य निर्माण के आंदोलन से लेकर आज छत्तीसगढ़ स्थापना के रजत जयंती वर्ष तक सांस्कृतिक पत्रकारिता ने राज्य की अस्मिता और पहचान को प्रसारित करने का ऐतिहासिक कार्य किया है।

बीज शब्द- सांस्कृतिक पहचान, विकास पत्रकारिता, लोक संस्कृति, समाचार पत्र, सांस्कृतिक रिपोर्टिंग प्रस्तावना-

किसी भी समाज और राष्ट्र के लिए उसकी सांस्कृतिक पहचान सर्वोपरि पूंजी होती है। सांस्कृतिक पहचान उन मूल्यों, विश्वासों, भाषा, खान-पान और रीति-रिवाजों का समेकित रूप है जो अपनेपन की भावना प्रदान करते हैं। छत्तीसगढ़ समृद्ध सांस्कृतिक विशेषता वाला प्रदेश है, जिसकी पहचान उसकी लोककला, लोकभाषा, लोकसाहित्य, लोकनृत्य, लोकसंगीत, जनजातीय परंपराओं, विरासतों, त्योहारों जैसी सांस्कृतिक विविधता से निर्मित होती है। वैश्वीकरण के इस युग में सांस्कृतिक विविधता और पहचान को प्रदर्शित करना आवश्यक होता है। सांस्कृतिक पहचान के लिए वहां की संस्कृति सबसे महत्वपूर्ण होती है। किसी भी राष्ट्र, राज्य



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

या समाज के लिए संस्कृति का वही महत्व होता है जो महत्व शरीर के लिए आत्मा की होती है। संस्कृति और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। संस्कृति वह समग्र जीवन पद्धति है, जो किसी समाज या समुदाय के विचारों, विश्वासों, रीति-रिवाजों, ज्ञान, कला, नैतिकता, भाषा, परंपराओं और सामाजिक व्यवहारों के रूप में अभिव्यक्त होती है। ये किसी समुदाय के ऐतिहासिक और सामाजिक मूल्यों को जीवंत रखते हैं। छत्तीसगढ़ की संस्कृति एक जीवंत, विविधतापूर्ण और आत्मीय परंपरा है जो जनजीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। लोकसंस्कृति यहाँ के जनमानस में जीवित है।

साहित्य पुनरावलोकन-

- भोले. सुशील. दिसंबर 2022 के जनमन अंक में (अब दिवंगत) लिखते हैं कि किसी भी अंचल की पहचान वहाँ की मौलिक संस्कृति से होती है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति एक मौलिक संस्कृति है। यहाँ कई ऐसे पर्व और संस्कार हैं जिन्हें इस देश के किसी अन्य अंचल में नहीं जिया जाता है। अपने परिवेश के अनुकूल पहनावा, श्रृंगार, खान-पान, बोली, भाषा, गीत-संगीत, कलात्मक अभिरूचि, कलात्मक वस्तुओं के निर्माण की अपनी परंपरा है जो अपने-आप में अदभुत है।
- जनमन अंक में साहित्यकार डॉ सुधीर शर्मा लिखते हैं कि आज छत्तीसगढ़ अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के जागरण का नया दौर देख रहा है। प्रदेश का सांस्कृतिक भूगोल भी बदल रहा है। प्रदेश अब अपनी परंपरा और स्वाभिमान के साथ जीने लगा है। छत्तीसगढ़िया मनुष्य अपनी धरा, परंपरा और संस्कृति की ओर लौट रहा है।
- वरिष्ठ कला समीक्षक राजेश गनोदवाले कहते हैं छत्तीसगढ़ अपने सांस्कृतिक वैभव के लिए ही बाहर जाना जाता रहा है। जिस छत्तीसगढ़ी मॉडल की बात की जा रही है उसमें छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत की प्रमुख भूमिका है।

अध्ययन का उद्देश्य-

- छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान की सुदृढ़ता में प्रमुख समाचार पत्रों की भूमिका का अध्ययन करना।
- छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान के प्रचार-प्रसार में प्रमुख समाचार पत्रों के प्रयासों का अध्ययन करना।
- छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत के प्रति जन-जागरूकता उत्पन्न करने में अखबारों के कार्यों का अध्ययन करना।
- छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में समाचार-पत्रों के योगदान का अध्ययन करना।



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

- डिजिटल दौर में समाचार-पत्रों द्वारा प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को प्रस्तुत करने के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना-

- छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान की सुदृढ़ता में प्रमुख समाचार पत्रों की भूमिका सकारात्मक व प्रभावपूर्ण है।
- छत्तीसगढ़ के प्रमुख समाचार पत्र विशेष कवरेज, कॉलम, फीचर के माध्यम से प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को स्थानीय व राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- प्रमुख समाचार पत्र छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक सामग्री प्रकाशित कर पाठकों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता एवं गौरव की भावना का विकास करते हैं।

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध विषय की प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक पद्धति तथा विषय-वस्तु विश्लेषण अनुसंधान प्रविधि का उपयोग किया गया है।

शोध की प्रकृति-

प्रस्तुत शोध “छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान की सुदृढ़ता में समाचार-पत्रों की भूमिका” विषय पर आधारित है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह जानना है कि छत्तीसगढ़ के प्रमुख समाचार-पत्र प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान, लोकपरंपराओं, लोककला, लोकसाहित्य, लोकगीत, लोकनृत्य, सांस्कृतिक पर्वों, लोक व्यवहार एवं स्थानीय विरासत के संरक्षण तथा प्रचार-प्रसार में किस प्रकार की भूमिका निभा रहे हैं।

शोध की प्रकृति मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक रखी गई है। अध्ययन में समाचार-पत्रों में प्रकाशित सांस्कृतिक सामग्री का विषय-वस्तु विश्लेषण किया गया है। भास्कर, नवभारत, नईदुनिया, हरिभूमि, पत्रिका, देशबंधु इत्यादि प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित सांस्कृतिक समाचार सामग्रियों का अवलोकन किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र-

प्रस्तुत अध्ययन में बस्तर संभाग में वितरित और व्यापक रूप से पढ़े जाने वाले प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों की सांस्कृतिक समाचार संबंधी सामग्री का विश्लेषण किया गया है। पिछले छह महीने की अवधि में समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार व विचार सामग्री की गुणात्मक पद्धति से विश्लेषण किया गया है।

शोध आधार- विकास पत्रकारिता के लोक सांस्कृतिक पहलू- विकास को सामान्यतः सामाजिक व आर्थिक रूप में ही परिभाषित किया जाता है परंतु व्यवहारिक स्वरूप में विकास में सांस्कृतिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय,



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

संस्थागत विकास भी शामिल होते हैं। देश व राज्य के बहिर्मुखी विकास के लिए वहां के सांस्कृतिक विशेषताओं को बनाए रखने और उसमें आवश्यक विकास करने की भी जरूरत होती है। आज समाज के सांस्कृतिक विकास को प्रगति के साथ जोड़ा गया है। एक समाज तभी विकास करता है जब वह अपनी संस्कृति, इतिहास और वैचारिक विरासत को भी संजोकर रखता है। इसलिए पत्रकारिता के एक महत्वपूर्ण प्रकार के रूप में विकास पत्रकारिता ने सांस्कृतिक गतिविधियों के संप्रेषण पर विशेष बल दिया है। यहां तक कि ग्रामीण जीवन की समस्याओं व उनके आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक जीवन की अपेक्षाओं को उजागर करने वाली ग्रामीण पत्रकारिता भी सांस्कृतिक पहलुओं को महत्व दे रही है।

पत्रकारिता के सैद्धांतिक कार्य व उद्देश्यों के अनुसार समाज की सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण, संवर्धन और उसके प्रचार-प्रसार में भी प्रिंट मीडिया को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। पत्रकारिता संस्कृति और लोकसंस्कृति के क्षेत्र में होने वाली हर नई गतिविधियों और परिवर्तन को जगह देता है। सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखना और आवश्यक सुधार के साथ निर्माण करना भी जनसंचार माध्यमों का मुख्य कार्य है। लक्ष्मीकांत शर्मा के अनुसार विरासत और संस्कृति को बचाने में मीडिया की महती भूमिका रही है।

कल के लिए कल को आज से जोड़ती सांस्कृतिक पत्रकारिता-

प्रिंट मीडिया विधा में सबसे प्रमुख समाचार पत्र किसी भी समाज की संस्कृति की खबरें केवल प्रकाशित ही नहीं करते, बल्कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में भी अमूल्य योगदान देते हैं। समाचार पत्र केवल सूचना का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे समाज की सांस्कृतिक चेतना, भाषा, परंपराओं और लोक मूल्यों के संवाहक होते हैं। सांस्कृतिक पत्रकारिता मुख्यधारा की पत्रकारिता का वह क्षेत्र है जो संस्कृति, कला, परंपराओं, लोकसंस्कृति, और सांस्कृतिक गतिविधियों पर केंद्रित होता है। यह समाज की सांस्कृतिक पहचान, मूल्यों, और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को उजागर करने, संरक्षित करने और प्रचारित करने का माध्यम है। सांस्कृतिक पत्रकारिता पंडवानी, राउत नाचा, बस्तर की कला और हरेली जैसे कई त्योहारों को समाज और वैश्विक मंच तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस तरह की पत्रकारिता से सांस्कृतिक धरोहर संरक्षित होती है। सांस्कृतिक पत्रकारिता कल की संस्कृति को आज से जोड़ती है। छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति को जीवित और प्रासंगिक रखने में सांस्कृतिक पत्रकारिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पाठक सांस्कृतिक लेखों को समाज और परंपराओं को समझने का जरिया मानते हैं। विशेषकर त्यौहार, रीति-रिवाज, लोककथा या क्षेत्रीय परंपराओं से जुड़े लेखों में लोगों की भावनात्मक भागीदारी देखी जाती है। छत्तीसगढ़ी पाठक ऐसी सामग्री पसंद करते हैं जो उनकी बोली, परंपराओं और स्थानीय जीवन से जुड़ी हो। शिक्षित पाठक सांस्कृतिक सामग्री में और गहराई और ऐतिहासिक-सामाजिक विश्लेषण की अपेक्षा करते हैं।



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

इसी वजह से छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति को स्थानीय और वैश्विक पाठकों के बीच प्रासंगिक और लोकप्रिय बनाने में समाचार पत्र निरंतर प्रयास करते हैं। हरिभूमि(चैपाल), पत्रिका(पहट), देशबंधु(मंडई) जैसे बहुत से समाचार पत्र साप्ताहिक रूप में विशेष सांस्कृतिक परिशिष्ट प्रकाशित करते रहते हैं। इन परिशिष्टों में सांस्कृतिक विषयों पर पर्याप्त सामग्री प्रकाशित होती है, जिनके माध्यम से पाठक उस क्षेत्र के सांस्कृतिक सौंदर्यबोध को आसानी से जान पाते हैं।

छत्तीसगढ़ के समाचार पत्रों में पूर्व से ही लोक संस्कृति को प्रमुखता से स्थान दिया जाता रहा है। लोकगीत, लोककथाएँ, पंथी, राऊत नाचा, सुवा नृत्य, करमा तथा अन्य त्यौहारों एवं पारंपरिक कलाओं पर नियमित लेख प्रकाशित किए जाते रहे हैं। इससे नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित होने का अवसर मिल रहा है। बस्तर, सरगुजा और अन्य आदिवासी क्षेत्र की परंपराओं, रीति-रिवाजों, लोक-देवताओं तथा उनके सांस्कृतिक आयोजनों को समाचार पृष्ठों पर खूब जगह दिया जा रहा है। बस्तर दशहरा, राजिम कुंभ(पुन्नी माघ मेला), हरेली, तीजा-पोरा और छेरछेरा जैसे पर्वों का विस्तृत प्रकाशन कर समाचार पत्रों ने उनकी ऐतिहासिकता एवं सांस्कृतिक महत्ता को जन-जन तक पहुँचाने का काम किया है।

समाचार पत्र: सांस्कृतिक विमर्ष के लिए सृजनात्मक मंच-

विशेषज्ञ कहते हैं कि समाचार पत्रों ने छत्तीसगढ़ की बिखरी हुई लोक-संस्कृति को संकलित कर उसे एक लिखित दस्तावेज और गौरवशाली पहचान दिलाने का उल्लेखनीय काम किया है। सिरपुर, भोरमदेव, दंतेश्वरी मंदिर, बस्तर दशहरा, चित्रकोट जलप्रपात या आदिवासी बाजार, नृत्य, खान-पान को प्रदेश में प्रसारित अखबारों के राष्ट्रीय संस्करणों में जगह दिया जा रहा है। सांस्कृतिक प्रचार हेतु अखबारों के सामान्य पेज की खबरें, साप्ताहिक सप्लीमेंट और अवसर विशेष पर व्यापक कवरेज से दुनिया के सांस्कृतिक मानचित्र पर प्रदेश को स्थापित करने में मदद मिला है। नवा रायपुर स्थित पुरखौती मुक्तांगन और अन्य सांस्कृतिक-पर्यटन स्थलों के बारे में नियमित प्रकाशन से पर्यटन को बढ़ावा मिला है। पत्रिका, नई दुनिया, देशबंधु, हरिभूमि, नवभारत, छत्तीसगढ़ जैसे अखबारों ने साहित्य, संस्कृति व कला को स्थायी स्तंभ दिए हैं।

राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान को लेकर कई सशक्त विमर्श भी शुरू हुआ है और पत्रकारिता इसका मुख्य साधन बनी है। प्रमुख समाचार पत्रों ने सांस्कृतिक धरोहरों, ऐतिहासिक स्थलों, पुरातात्विक महत्व के स्मारकों तथा लोककलाओं के संरक्षण की आवश्यकता पर जनमत तैयार करने का काम किया है। विभिन्न फोटो फीचर, संपादकीय टिप्पणियों व आलेखों के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति लोगों को प्रेरित किया जा रहा है। इन्हीं सब सकारात्मक वजहों से प्रदेश के सांस्कृतिक धरोहर व विरासतों को यूनेस्को की सूची में शामिल करने की चर्चा होने लगी है।



ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, छत्तीसगढ़ी अस्मिता एवं सांस्कृतिक आंदोलन-

इस बात को स्वीकार किया गया है कि प्रदेश के समाचार पत्रों ने छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति को शब्दों के धागे में पिरोकर एक ठोस छत्तीसगढ़ी पहचान का रूप दिया है। लोगों में सांस्कृतिक स्तर पर 'सबले बढ़िया छत्तीसगढ़िया' का भाव दिया है। सांस्कृतिक विशेषज्ञ कहते हैं कि प्रदेश के समाचार पत्रों ने यहाँ की सांस्कृतिक महक को दस्तावेजों में बदलकर आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित कर दिया है। संदर्भों के आधार पर कहा जाता है कि छत्तीसगढ़ राज्य बनने से बहुत पहले से ही यहाँ की भाषा, लोकजीवन, आदिवासी परंपराओं और सांस्कृतिक माटी की गंध को बचाने का काम प्रिंट मीडिया कर रहा था। यानी जब छत्तीसगढ़ एक अलग भौगोलिक और राजनीतिक इकाई के रूप में संघर्ष कर रहा था तब प्रिंट मीडिया ने यहाँ की लोक संस्कृति, भाषा और परंपराओं को एक नई पहचान दी थी।

क्षेत्र की भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषाई वैशिष्ट्य और आवश्यक सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक विकास के लिए 01 नवंबर 2000 को इस प्रदेश का गठन किया गया। तब से यह प्रदेश निरंतर प्रगति की नित नई उच्चाईयों को छूते हुए आगे बढ़ रहा है। छत्तीसगढ़ मुख्य रूप से एक जनजातीय बाहुल्य राज्य है। यहाँ की संस्कृति प्रकृति से जुड़ी है। देश के दक्षिण-पूर्व हिस्सों में प्रकृति के गोद में बसे होने के कारण छत्तीसगढ़ की सुंदरता भी अनोखी और अलौकिक है।

जब 1990 के दशक में पृथक छत्तीसगढ़ राज्य का आंदोलन अपने चरम पर था, तब स्थानीय प्रिंट मीडिया ने छत्तीसगढ़ी भाव को (धान का कटोरा, सीधे-सरल लोग, समृद्ध संस्कृति) को एक राजनीतिक और सांस्कृतिक हथियार बनाया। अखबारों ने यह विमर्श (नैरेटिव) तैयार किया कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान मध्य प्रदेश के अन्य हिस्सों से बिल्कुल अलग और समृद्ध है। इस विमर्श ने राज्य निर्माण की नींव को मजबूत किया। ऐसा भी माना जाता है कि छत्तीसगढ़ राज्य का गठन केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक आंदोलन की परिणति थी। प्रिंट मीडिया ने छत्तीसगढ़ी अस्मिता और धान का कटोरा जैसी सांस्कृतिक व भौगोलिक पहचान को खूब उकेरा। अखबारों ने यहाँ के महान स्वतंत्रता सेनानियों और सांस्कृतिक नायकों के योगदान को बार-बार प्रकाशित कर जनता में एक सामूहिक सांस्कृतिक गर्व की भावना जगाई।

पूरे विश्वास से यह कहा जा सकता है कि प्रिंट मीडिया ने छत्तीसगढ़ को सिर्फ नक्शे पर स्थापित करने में मदद नहीं की बल्कि यहां की बोली, और संस्कृति को लोगों के मन में बसाने का काम किया है। छत्तीसगढ़, जिसे लोक संस्कृति की धरती कहा जाता है। यहाँ की पत्रकारिता ने आरंभ से ही सांस्कृतिक विषयों को प्रमुखता दी है। प्रदेश के अखबारों के प्रयासों के कारण छत्तीसगढ़ी समाज की परंपराएँ, बोली, पर्व, गीत, नृत्य, नाचा, लोकगाथाएँ महज एक सूचना व समाचार से ज्यादा संवेदना और अस्मिता के विषय बन गए हैं।



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

राज्य स्थापना के पहले के इतिहास की ओर हम नजर डालते हैं तो यह बात भी सामने आती है कि छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता की शुरुआत ही यहाँ की संस्कृति और सामाजिक चेतना को जगाने के लिए हुई थी। सन् 1900 में प्रकाशित प्रदेश का प्रथम पत्र 'छत्तीसगढ़ मित्र' में संपादक पंडित माधवराव सप्रे ने छत्तीसगढ़ी भाषा, लोक साहित्य और संस्कृति को पहली बार एक गंभीर मंच दिया था। इस पत्र ने औपनिवेशिक काल में छत्तीसगढ़ी अस्मिता का निर्माण किया था। सन् 1936-1951 के बीच पंडित रविशंकर शुक्ल द्वारा प्रकाशित महाकौशल में छत्तीसगढ़ की कला, त्योहारों और लोक जीवन को बड़े पैमाने पर जनता के सामने रखा गया था। आज यदि छत्तीसगढ़ी संस्कृति देश-विदेश में आदर के साथ देखी जाती है तो उसकी शुरुआती जमीन स्थानीय पत्रकारों ने ही तैयार की थी। राज्य गठन के बाद भी छत्तीसगढ़ी अस्मिता की भावना को जगाने में प्रिंट मीडिया एक सेतु का काम कर रहा है।

शोध विप्लेषण: राज्य की आत्मा की शाब्दिक अभिव्यक्त करती सांस्कृतिक रिपोर्टिंग-

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक रिपोर्टिंग भी जागरूक रही है। यहां की सांस्कृतिक संवेदना को पुष्ट करने और सृजनात्मकता के लिए सांस्कृतिक रिपोर्टिंग निरंतर होती रही है। वैसे तो छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक धरोहरों को अभिव्यक्त करने के लिए यहां कई अनमोल पुस्तकें हैं पर बदलते समय के साथ यहां की संस्कृति को बतलाने व एक सकारात्मक पहचान दिलाने में समाचार पत्रों का बड़ा योगदान रहा है। प्रदेश के सभी प्रमुख पत्रों में आज सांस्कृतिक सूचना के लिए अलग से पृष्ठ अथवा स्तंभ के रूप में कुछ न कुछ पाठ्य सामग्री जरूर होता है। सिटी पेज पर भी सांस्कृतिक खबरें लीड बनने लगी हैं। दरअसल कला व संस्कृति जगत की खबरों के बिना मीडिया अधूरा सा हो जाता है। सांस्कृतिक गतिविधियों की रिपोर्टिंग को लेकर आज समाचार पत्रों के दफ्तर में उत्साह भी दिखाई देता है।

इसी सांस्कृतिक रिपोर्टिंग ने लोगों के बीच 'गढ़वो नवा छत्तीसगढ़' का भाव-विचार दिया है। छत्तीसगढ़िया स्वाभिमान और अभिमान को लेकर एक नई लहर पैदा की है। वर्तमान मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय कहते हैं विरासत हमारी पहचान है और संस्कृति हमारा स्वाभिमान है। छत्तीसगढ़ की धरती केवल प्राकृतिक संपदा से ही समृद्ध नहीं है, बल्कि इसकी सांस्कृतिक विरासत विश्व स्तर पर विशिष्ट पहचान रखती है। जनमन के एक पूर्व अंक में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल कहते हैं कि सरकार ने लोक-संस्कृति को सहेजते हुए उसे समग्र चेतना का वाहक बनाया है। जिससे छत्तीसगढ़ का जनमन अपनी मूल पहचान पर गौरव करने के साथ-साथ समूची ताकत से समृद्ध छत्तीसगढ़ गढ़ने में जुट गया है।

आज छत्तीसगढ़ के प्रमुख दैनिक समाचार पत्र संस्कृति के संरक्षक और संवर्धक भी बने हुए हैं। समाचार पत्रों के सांस्कृतिक परिशिष्ट राज्य की सांस्कृतिक आत्मा को शब्दों में ढालते हैं। ये केवल जानकारी देने का काम नहीं कर रहे बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेजों का संरक्षण भी कर रहे हैं। पत्र-पत्रिकाओं ने छत्तीसगढ़ की जनजातीय



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

कलाओं को आधुनिक वैश्विक समाज के सामने री-ब्रांड करने में मदद की है। कई अखबारों ने सप्ताह में कम से कम एक दिन पूरी तरह छत्तीसगढ़ी भाषा में पन्ने या विशेष कॉलम प्रकाशित कर रहे हैं। सप्ताहांत में आंतरिक पर्यटन और सांस्कृतिक गौरव को लेकर कई समाचार सामग्री दिया जा रहा है। पारंपरिक खानपान, खेल, प्रतीकों को पुनर्स्थापित करने का काम समाचार पत्रों द्वारा किया जा रहा है। हाल में शुरू हुए बस्तर पंडुम को प्रचारित करने का काम समाचार पत्रों द्वारा व्यापक तौर पर हुआ है।

जब भी छत्तीसगढ़ के लोक दल विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रिंट मीडिया उन्हें फ्रंट पेज पर जगह देकर छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया की भावना को जन-जन तक पहुंचाता है। समाचार-पत्रों के संपादकीय, लेख और विचार स्तंभ सांस्कृतिक मुद्दों पर चर्चा को प्रोत्साहित करते हैं तथा सांस्कृतिक संरक्षण की आवश्यकता पर जनमत तैयार करते हैं। अखबारों ने हाल ही में ब्रह्मलीन हुई महान लोककलाकार व पद्मविभूषण सहित विभिन्न नागरिक पुरस्कारों से सम्मानित डॉ तीजन बाई (पांडवानी) की संघर्ष यात्राओं और कला की विशिष्टताओं को प्रमुखता से छापा।

ग्रामीण अंचलों में छिपे लोक कला पर समाचार पत्रों ने विशेष आलेख प्रकाशित कर उन्हें व्यावसायिक पहचान दिलाई। ग्रामीण स्तर के कई कलाकार के हुनर को शब्द देकर प्रसिद्धि दिलाई। कई परंपराएं जो लुप्त हो रही थीं, उन्हें अखबारों ने न्यूज, आलेख व फीचर में माध्यम से चर्चा में लाने का काम किया है। विशेष अवसरों पर अखबारों ने प्रदेश में मनाए जाने वाले विशेष त्योहारों के पीछे के पारंपरिक और वैज्ञानिक महत्व को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का काम किया है। बस्तर के जनजातियों की अनूठी संस्कृति, उनके रहन-सहन और घोटुल जैसी परंपराओं को बिना तोड़े-मरोड़े समाज के सामने लाने का काम समाचार पत्रों ने किया है। अखबारों ने आदिवासी सहित विभिन्न स्थानीय समाज की सांस्कृतिक जीवन को समझा और उनके अनुरूप भी राज्य की सांस्कृतिक पहचान गढ़ने का प्रयास किया है। संचार शास्त्रियों के अनुसार प्रदेश की प्रिंट मीडिया ने वैश्विक अवधारणा के तहत सांस्कृतिक साम्राज्यवाद से प्रदेश को बचाए रखने में बड़ी भूमिका निभाई है। कोई आयातित संस्कृति यहां के सामाजिक मूल्य, भाषा और रीति-रिवाज-परंपराओं को कमजोर नहीं कर पाया है।

बस्तर में 75 दिनों तक चलने वाला दशहरा, रायगढ़ के चक्रधर समारोह और राजिम-पुन्नी मेला जैसे बड़े सांस्कृतिक आयोजनों की व्यापक रिपोर्टिंग ने सभी को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया। बस्तर दशहरा और हरेली जैसे त्योहारों की पत्रकारीय कवरेज सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया है। प्रिंट मीडिया ने बस्तर, सरगुजा और जशपुर जैसे क्षेत्र की विशिष्ट परंपराओं, जनजातीय कलाओं और उनकी जीवनशैली को मुख्यधारा के विमर्श में लाया। इससे शहरी आबादी के मन में भी जनजातीय संस्कृति के प्रति सम्मान और समझ पैदा हुई, जो राज्य की साझा सांस्कृतिक पहचान का एक मजबूत स्तंभ बन गया है। प्रिंट मीडिया की कोशिशों के कारण छत्तीसगढ़ के



पारंपरिक त्योहार (जैसे हरेली, तीजा-पोला, छेरछेरा) और यहाँ का खान-पान (जैसे फरा, चीला, मुठिया, बोरे-बासी) आज आधुनिक दौर में भी बेहद लोकप्रिय बने हैं।

सांस्कृतिक पहचान व मूल्यों का दस्तावेजीकरण-

आज के सोशल मीडिया के दौर से बहुत पहले अखबारों के पन्नों ने पारंपरिक छत्तीसगढ़ी व्यंजनों की रेसिपी को सहेजने का काम किया है। हालाँकि, डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा तथा पाठकों की बदलती रुचियों के कारण अखबारों के सामने अनेक चुनौतियाँ भी पेश की हैं फिर भी, विश्वसनीयता, गहन विश्लेषण और स्थानीय मुद्दों पर गंभीर प्रस्तुति के कारण समाचार पत्र आज भी पाठ्यता व सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण के महत्वपूर्ण माध्यम बने हैं। डिजिटल मीडिया तेज है, तब भी गाँव-कस्बों तक छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति पहुँचाने का काम अखबार ही कर रहे हैं। यदि डिजिटल मीडिया तात्कालिकता (तुरंत खबर देने) का साधन है, तो प्रिंट मीडिया स्थायित्व और गहराई का प्रतीक है। संस्कृति को लेकर केवल सतही सूचना जानने के लिए नहीं, बल्कि उसे गहराई से समझने और संजोने के लिए समाचार पत्र आज भी समाज का सबसे भरोसेमंद माध्यम हैं।

छत्तीसगढ़ की संस्कृति को लेकर किताबी और रिसर्च के इतर अन्य जानकारी के लिए समाचार पत्रों की रिपोर्टिंग ही सबसे महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में समाज को प्राप्त हो रहा है। अखबारों ने प्रदेश की लोक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं, धार्मिक ग्रंथों और परंपराओं को लेकर लिखित सामग्री देकर उन्हें नष्ट होने से बचाने के प्रति आगाह भी किया है। ताकि आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों और प्राचीन संस्कृति को समझने में दिक्कत न हो। अखबारों ने गोंड, बैगा, माड़िया, हल्बा सहित अन्य जनजातियों के रीति-रिवाज, विवाह पद्धति, त्यौहारों की रिपोर्टिंग करके इसे रिकॉर्ड के रूप में सुरक्षित किया है।

निष्कर्ष-

प्रदेश के दैनिक अखबार सिर्फ सूचना देने वाले माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक चेतना के वैश्विक वाहक हैं। पत्रकारिता के व्यवसायीकरण के कारण भले ही आज भी सांस्कृतिक समाचारों का स्थान सीमित हों और डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव से प्रिंट पाठक घटे हों पर इन चुनौतियों के बावजूद पाठक समाचार पत्रों में लोक संस्कृति विषय पर नियमित सामग्री की इच्छा रखते हैं। प्रमुख समाचार पत्र पाठकों की इस जरूरत को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। यदि समाचार-पत्र स्थानीय संस्कृति और भाषा को निरंतर प्राथमिकता देते रहें तो छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक सशक्त होगी। समाचार पत्र समाज की संस्कृति की आईना बने रहेंगे। समाचार पत्र सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए उसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भविष्य में भी यदि अखबार स्थानीय संस्कृति और भाषा को पर्याप्त स्थान देते रहे तो छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत और अधिक सशक्त एवं समृद्ध होगी।



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

प्रदेश के सांस्कृतिक विविधता व विशेषता की खुशबू दुनिया में बिखरेगी। लोगों को अपनी संस्कृति को महसूस करने और उसमें जीने की प्रेरणा भी मिलती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. गौतम, वीणा एवं सुरेश , भारतीय पत्रकारिता कल, आज और कल, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 2001
2. आलोक, डॉ. टीडीएस सांस्कृतिक पत्रकारिता. हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला 2003
3. हाड़ा, माधव, मीडिया, साहित्य और संस्कृति- श्याम प्रकाशन, जयपुर 2006
4. गुप्ता, योगेश कुमार, मीडिया के विविध आयाम, आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स जयपुर 2006
5. अग्रवाल, डा केएल, भारत की सांस्कृतिक विरासत - शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद 1991
6. महाजन, डॉ धर्मवीर, शर्मा, प्रो. भानुप्रकाश, डॉ श्रीमती कमलेश भारत की सांस्कृतिक विरासत, शिक्षा साहित्य प्रकाशन 1988-89
7. जैन. प्रो रमेश. प्रिंट मीडिया यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा लि जयपुर 2011
8. अमरोहित, डॉ. गीतेश कुमार,, छत्तीसगढ़ कला एवं संस्कृति, सरस्वती बुक्स, विशाल कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली 2021
9. मिश्र, अरविंद छत्तीसगढ़ की बानगी, आनी-बानी के छत्तीसगढ़ संस्कृति व पुरातत्व विभाग, छत्तीसगढ़ का प्रकाशन 2021
10. ग्रामीण विकास को समर्पित मासिक पत्र कुरुक्षेत्र लोक कला और संस्कृति विशेषांक अप्रैल 2021
11. छत्तीसगढ़ जनसंपर्क का मासिक प्रकाशन जनमन के अंक
12. बिहान, पुरातत्व व संस्कृति विभाग का पत्र के विविध अंक
13. त्रिपाठी, डॉ राजाराम, ककसाड़, मासिक पत्र
14. शर्मा, डॉ, सुधीर, छत्तीसगढ़ मित्र, मासिक पत्र

* <http://akaltara.blogspot.com/2020/04/blog-post.html>

* https://www.researchgate.net/publication/333268326_Cultural_journalism-Journalism_about_culture

* <https://www.naidunia.com/chhattisgarh/raipur-hindi-journalism-remained-a-force-in-the-development-of-chhattisgarh-says-during-6881082>

* <https://www.samachar4media.com/industry-briefing/44900-44900.html>